International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-01-2020; Accepted: 10-02-2020; Published: 04-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 19-21

आज के परिप्रेक्ष्य में आत्मविश्वास से भरी देह से परे नारी

Suniti Tyagi
Acadmic, HEC PG College, Haridwar, Uttrakhand, India

सारांश
21 वीं सदी में सारे विश्व में नारी शक्ति के अभूतपूर्व जागरण की शुरूआत हो चुकी है। आज की स्त्री की नियति को रोक पाना किसी संस्था अथवा समाज के बूते की बात नहीं है। पुरूष के द्धारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है परन्तु सत्य नहीं है। नारी अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र दे सकती है वैसा पुरूष साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके। प्रत्येक नारी को अपने जीवन पर गर्व होना चाहिए,और स्वीकार करना चाहिए कि उसका शरीर केवल भार नही है कोई मिट्टी का ढेला नही है यह उससे बड़ा है विधाता ने उसे बनाया था तो उसका उद्देश्य उसे दण्ड देना नही था बल्कि एक नारी बनाकर विधाता ने उसका उद्धार किया है। कामकाजी महिलाओं को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। नारी की आलोचना प्रत्येक युग में किसी ना किसी रूप में होती रही है। समाज में निश्चित स्थान बनाने वाली प्रत्येक महिलाओ के सामने व्यक्तित्व टकराव की समस्या सैदव बनी रहती है। पिछले कई दशको से सांस्कृतिक बदलाव पर चर्चा चलती रही है। और उसमें नारी की स्थिति का मुद्दा केंद्र में रहा। आज की नारी परम्पराओं से और उसके बनाए नियमों से जूझ रही है परन्तु आत्मनिर्भर होती स्त्रियों ने अब इस व्यवस्था से निबटने की रणनीति अपने अपने स्तर पर तय करनी शुरू कर दी है। स्त्री खामोश रहती है। हॉ, जब उसकी खामोशी टूटने लगती है तो बहुत कुछ ऐसा अभिव्यक्त होता है जिसे अभी तक शब्द ही नहीं दिए गए। देह में क्या धरा है यह तो नश्वर है यही हमारी भारतीय परम्परा है जो इस नश्वर चीज के इर्द–गिर्द घूमती है। परम्पराओं के चक्रव्यूह में फॅस कर इसकी जरूरतों को नकारा जाता है। आज नारी के लिए ज्ञान के सारे अवसर खुले हुए है। आज के परिप्रेक्ष्य में नारी भारतीय समाज की एक समर्थ और स्वतंत्र इकाई बनती जा रही है किसी भी चुनौती दुविधा और बाधा का पूरी तरह सामना करने और उनसे दो चार होने का साहस स्त्री कि लिए उतना दुलर्भ नही है। जितना पहले था

मूल शब्द: विश्व, नारी शक्ति, आत्मविश्वास

प्रस्तावना
नए युग का संदेश लेकर आई 21वीं सदीं नारी शांति के अभूतपूर्व जागरण की है। जगत गुरु भारत में नारी के नए युग की शुरुआत हो चुकी है। इसके साथ 21वीं सदी में सारे विश्व में भी नारी शक्ति के अभूतपूर्व जागरण की शुरुआत हो चुकी है इसलिए हम यह पूरे विश्वास से कह सकते है कि एक मॉ शिक्षित या अशिक्षित हो सकती है परन्तु वह एक अच्छी शिक्षिक है जिससे स्नेह और देखभाल करने का बेहतर पाठ हर कोई सीख सकता है अब नारी शक्ति युग शक्ति बनने जा रही है। उसकी इस नियति को रोक पाना किसी व्यक्ति, संस्था, वर्ग अथवा समाज के बूते की बात नही है। अब वो जमाने गए जब औरत को रोमन कानून में बेवकूफ और असन्तुलित कहा जाता था। अरास्ताइन जैसे लोग बिना सोचे–समझे कहते थे कि –''औरत वह जीनह है जो न स्थिर है और न कृतसंक्लप ''।

नारी के अस्तित्व के संदर्भ में किसी निष्कर्ष पर पहुंचना अत्यंत दुष्कर है, क्योकि इस विषय में जब भी कोई लेखक या वक्ता बोलना अथवा लिखना चाहता है तो एक अजीब चक्रव्यूह में फंस जाता है। नारी शोषण या नारी संघर्ष के विषय में बुद्धिजीवियों ने निरंतर अपनी धारणा को स्पष्ट किया है।यह भी सच है कि विचारों में निरंतर विरोधाभास बना रहा फिर भी सरोज वशिष्ट का विचार है–: ''जब तक आज की नारी निष्ठापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभाती रहेगी पुरुष से अधिक प्रशंसा की आशा नही करेगी उसकी क्षमता निपुणता पर कोई प्रश्न चिह्न नही लग सकता है। बस आज की नारी को सावधान रहते हुए अपने विवेक व दक्षता का भरपूर उपयोग करना चाहिए। आदर, प्रेम, सद्भावना स्नेह सब कुछ एक हाथ परे धरा है संतुष्ट और प्रसन्नचित रहकर अगर नारी को दो गुनी मेहनत भी करना पड़े तो आने वाली सदी में भविष्य का भय स्वंय ही भयभीत होकर दबे पांव लौट जाएगा''।

प्रभाखेतान जी का ''अपने अपने चेहरे'' नारी प्रधान उपन्यास है इसमें लेखिका ने कई मान्यताओं को नकारते हुए अपनी शर्तो पर जीने की शर्त रखी है परिवार मे जीने की लालसा लिए अपना स्थान बनाए रखने की राजनीति से ऊपर उठकर सामाजिक ढ़ॉचे की पोल खोलता यह उपन्यास मारवाड़ी समाज की पृष्ठभूमि पर आधारित तो है परन्तु केन्द्रित नही है क्योकि यह समाजों की विड़म्बना है। इसी श्रृंखला में महादेवी वर्मा जी ने ठीक ही लिखा है ''पुरूष के द्धारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है, यर्थाथ के अधिक समीप नही। पुरूष के लिए नारीत्व अनुमान है, परन्तु नारी के लिए अनुभव। अतःअपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह दे सकती है वैसा पुरूष साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।

डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी नारी मर्यादा के पोषक रहे है। अपने उपन्यास(बाणभट्ट की आत्मकथा) के पात्र निपुणिका के माध्यम से उन्होने नारी की परिभाषा का सही चित्रण किया है क्योकि उसे (निपुणिका को)देखते हुए भ्रष्ट नारी की परिभाषा में संशोधन करना उचित होगा। कंलकित, अपमानित तथा भ्रष्ट नारियों में सच्चे नारीत्व का विकास दिखाकर उन्होने इस समाज को नारी के विषय में नई दिशा प्रदान की है। परम्पराओं की आड़ में उनका शोषण उचित नही है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने जहॉ नारी स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया वहीं उन्होंने स्वतत्रता के अनुचित प्रयोग पर रोक लगाई है।इसी संदर्भ में तसलीमा नसरीन ने लिखा है''समाज में कुछ ही लोग होगे जो निर्भिक और लज्जाहीन स्त्री को बुरा नही कहते हो। चूॅकि डर एंव लज्जा को ही स्त्री का मुख्य गुण समझा जाता है,चूॅकि स्त्री की लिए सीमित रास्ता ही निर्धारित किया जाता है इसलिए वह रास्ते, गलियारे में, रेस्तरां में अकेले चलती या बैठती है, तो लोग उसकी तरफ हैरत से देखेंगें, सीटी बजायेंगें, उससे सटकर खड़े होगें और परखेंगें कि यह लड़की 'वेश्या' तो नहीं, क्योकि वेश्या के अलावा कोई भी

लड़की निडर होकर नही चलती। वेश्या के अलावा पूरे शहर में कोई अकेला स्वच्छंद सीमा लाघंकर रास्ते में नही निकलता है।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी नारी को विधाता की अनमोल रचना मानते है। प्रत्येक नारी को अपने जीवन पर गर्व होना चाहिए। ''यह मेरा शरीर केवल भार नही है, केवल मिट्टी का ढेला नही है, यह उससे बड़ा है। विधाता ने जब उसे बनाया था तो उसका उद्देश्य मुझे दंड़ नही था। उन्होने मुझे नारी बनाकर मेरा उपकार किया था''।नारी की आलोचना प्रत्येक युग में होती रही है। आलोचना के डर से द्विवेदी जी नारी का साथ नही छोड़तें और उसको अपने उपन्यासों में मुख्य पात्र दिखाते समय वह नारी के साथ खड़े दिखाई देते है। जिससे उनके विचारों को दृढ़ता मिलती है'' सारे जीवन मैने स्त्री शरीर को किसी अज्ञात देवता का मंदिर समझा है आज लोगों की आलोचना के डर से उस मंदिर को कीचड़ में धसा हुआ छोड़कर जाना मेरे वश की बात नहीं।

डा0 त्रिभुवन सिंह का मानना है कि '' सामन्ती संस्कृति में नारी की जो स्थिति थी उसे ही द्विवेदी जी भारतीय समाज मे मूल में स्वीकार करते है। वे ऐसी नारी की कल्पना करते है जो पूरूष की बंदिनी नही उसकी सहभागिनी है'

प्रभा खेतान जी ने ''सेकेण्ड सेक्स '' में ठीक ही लिखा कि ''औरत की पहली लड़ाई अर्थ की दुनिया से शुरू होती है मैने भी जीवन जीते हुए यही सीखा है कि पैसे कमाने से स्त्री निर्णय स्वयं लेना सीखती है और निर्णय की क्षमता उसके सघर्षो को मजबूत करती है''यह माना जाता है कि दृढ़ संकल्प हर बाधा का हल होता है। कामकाजी महिलाओं को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि कामकाजी महिलाओ के पास धर और बाहर की दोहरी जिम्मेदारी वहन करनी के साथ–साथ बाहरी क्रिया कलापों के लिए अतिरिक्त समय ही नहीं है। प्रभा खेतान जी के उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की प्रमुख समस्याओं के साथ इनका पारिवारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है का उल्लेख हुआ है चूँकि वे स्वयं एक कामकाजी महिला थी। प्रभा खेतान जी का मानना है कि '' आर्थिक दृष्टिसे आत्मनिर्भर तथा समाज में निश्चित स्थान रखने वाली कामकाजी महिलाओं के सामने व्यक्तित्व टकराव की समस्या सदैव बनी रहती है। दोहरी भूमिका निभाने के साथ–साथ उसे जीवन में परस्पर विरोधी लक्ष्य भी लेकर चलना पड़ता है। विवाह जहॉ आत्मत्याग और सहयोग की मॉग करता है वहीं दूसरी ओर कामकाज एवं प्रतिस्पर्धा की दोहरी जिम्मेदारी पूर्ण करने की चिन्ता न केवल सदैव बनी रहती है अपितु वह स्वयं भी एक विकराल रूप धारण कर लेती है।''

कामकाजी स्त्रियों की इस स्थिति का अदांजा शीर्ष संस्थाओं को भी है इसलिए चार साल पहले विश्व बैंक ने टिप्पणी की थी कि '' हम महिलाओं के सशक्तिकरण की चाहें कितनी डींगे हॉक ले,परन्तु अब की नारी पढ़लिख कर कामकाजी और आत्मनिर्भर जरूर हुई है लेकिन घर से बाहर उन्हे और ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है कई बार उन्हें हिंसा का शिकार भी होना पड़ता है इसके बाद भी उन्हे घर के काम या अन्य जिम्मेदारियों से छूट नही मिलती। इन सारे तथ्यों का एक ठोस संकेत विश्व बैंक की '' महिला कारोबार और कानून 2016'' रिर्पोट में किया गया था।

मैत्रयी पुष्पा का उपन्यास 'झूला नट'ग्रमीण परिवेश में जीने वाली स्त्रियों के जीवन का वास्तविक चित्रण है। पुरूष सत्तात्मक समाज में नारी की मानसिक स्थिति तथा उसके विस्फोटक विद्रोह का वर्णन किया है। पिछले दशकों में सास्कृतिक बदलाव पर चर्चा चलती रही है और उसमें नारी की स्थिति का मुद्दा केंद्र में रहा किंतु विडंबना ही रही कि इस विषय को छूते ही बड़े–बड़े बुद्धिमान व्यक्ति मानवीयता का आवरण उतारकर पारंपरिक सुर अलापने लगतें हैं लेकिन विकास की प्रक्रिया धीमी हो सकती है अवरूद्ध नही । इसलिए ऐसा चिंतन चलता रहा और सामने आता रहा। आधुनिक नारी विद्रोह कर रही है। परम्पराओं से और उसके बनाए हुए नियमों से जूझ रही है। इसका सीधा संबध समाजिक यथार्थ से है। समाज ने बड़े पैमाने पर सक्रिय और आत्मनिर्भर होती स्त्री की स्वतंत्र चेतना पर अकुंश लगाने के उसके हथकंडे जरूर बदलेहै मगर खुशी की बात यह है कि इसके बरक्स बड़े पैमाने पर आत्मनिर्भर होती स्त्रियों ने अब इस व्यवस्था से निबटने की रणनीति अपने–अपने स्तर पर तय करनी शुरू कर दी है जो समाज ,जाति, वर्ग, और लिंग पर टिकी हुई असमानताओं से भरा हुआ है, उसमें औरतों के प्रति समानता और न्याय पर टिका हुआ व्यहार हासिल करना एक लंबे संघर्ष की अपेक्षा रखता है। समय बदला है,सभ्यता बदली है संस्कृति प्रभावित हुई है तो स्त्री का परिवर्तन भी अस्वाभाविक नहीं लगता कुछ परिवर्तन तो उसका भी होना ही था।''स्त्री बदली ह ैवें घर से बाहर निकली है, उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है। हमारे यहॉ के लोक तांत्रिक मूल्यों ने उन्हें आगे बढ़ने की आजादी दी है और छिपा हुआ मर्दनाद फुंफकार रहा है..... .....स्त्री उनकी मुट्ठी से निकली जा रही है और वे गला फाड़कर चिल्ला रहे है''–अपसंस्कृति, अश्लीलता।''

समाज और वैचारिक दुनिया में औरत की जगह को लेकर चिंता और अध्ययन कोई नया विषय नही है जानस्टुअर्ट मिल, मेरी वॉल स्टन क्राफ्ट से होते हुए सीमोन द बोउवा तक होती हुई यह परंपरा भारत में प्रभा खेतान जैसी चिंतकों तक आती है। नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली' जिसमें एक आधुनिक भारतीय नारी के अन्तर्मन की छटपटाहट का चित्रण है एक ओर जहॉ शाल्मली आधुनिक विचारों से ओतप्रोत अपने आस–पास होने वाली घटनाओं का खुलकर सामना करती है वहीं एक आदर्श भारतीय नारी की भॉति मन में अपनों के लिए पीड़ा और प्रेम संजोए रिश्तों को जीने–जोड़ने प्रयास करती है उपन्यास का सम्पूर्ण कैनवास कुछ कर गुजरने के रंगो से सरोबर है। स्त्रियों के पास वे शब्द नही जिसके माध्यम से वे अपने असंतोष को अभिव्यक्त कर सकें। स्त्री खामोश रहती है हॉ, जब उसकी खामोशी टूटने लगती है तो बहुत कुछ ऐसा अभिव्यक्त होता है जिसे अब तक शब्द ही नही दिए गयें है। इसी श्रृंखला में लेखिका मृदुला गर्ग के द्वारा लिखा गया उपन्यास कठगुलाब जो पॉच खण्डों में विभक्त है स्त्री मुक्ति को शेष समाज से निरपेक्ष एक आत्यंतिक समस्या मानकर लिखा गया है। जिसमें प्रत्येक खण्ड में एक पात्र से परिचय होता है इसमें स्मिता,मारियान, सीमा,असीमा विपिन,माया, और नर्मदा की कहानी है। पूरब और पश्चिम दोनो में औरत के दैहिक,मानसिक और बौद्धिक शोषण के जो चक्र लगातार रहे है उनका सामना स्त्रियॉ अपने आत्मबल और आपसी संगठन से कैसे कर रही है इसकी झलक इस उपन्यास में देखने को मिलती है। इस उपन्यास को ''यूनिवर्सल सिस्टर हुड'' और पर्सनलाइज पॉलिटिकल '' के आदर्श से प्रभावित बड़ी उठान के उपन्यास के रूप में देखा जाता है।

मणिलाल के लेख ''सौन्दर्य प्रतियोगिता सीता से द्रोपदी तक''के आधार पर हम यह तो मान ही सकते है कि आजादी के इतने वर्षो में हमारी कोई अन्य उपलब्धि रही हो या न रही हो परन्तु स्त्री देह की महिमा से उभरे है। मणिलाल जी के लेख के अनुसार ''देह में क्या धरा है..... यह तो नश्वर है .....यही है हमारी ''भारतीय '' परम्परा जो इसी नश्वर चीज़ के इर्द–गिर्द घूमती है हमारी पवित्रता–अपवित्रता ,सुदंरता –असुदंरता की तमाम धारणाएँ आदि के चक्कर में अक्सर शरीर का ही अपमान करने लग जाते है। और इसका शोषण–दमन करने लगते है। कभी पवित्रता और पंरपरा के चक्रव्यूह में फॅसकर इसकी जरूरतों को नकारतें है कभी इसे पीड़ा पहुॅचाते है तो कभी इसे बाजार में खड़ा कर देते है । खरीद–फरोख्त के लिए ये दोनो ही अतिरेक है दोनो से ही ईश्वर का अपमान होता है दोनो तरह के लोग

कुदरत की रचना को ठुकारते है या बेजा इस्तेमाल करते है''। हजारी प्रसाद जी ने नारी विषयक अपनी सम्पूर्ण मानसिकता का परिचय कराया है। इस तत्व को उन्होने नारी और पुरूष दोनो के लिए आवश्यक माना है। द्विवेदी जी नारी को सम्मान तथा श्र. द्धा की पात्र मानते है आजीवन उन्होने नारी को देव प्रतिमा समझा है यह जहॉ भी हो जिस अवस्था में भी हो सम्मान और श्रृद्धा की पात्र है'' इसी संदर्भ में डा0 स्नेह लता शरेशचद्र आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के उपन्यास के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत करती है'' नारी के शील और सौन्दर्य को त्याग और सेवाभाव की शक्ति और करूणा के तत्कालीन युग नैतिक अधपतन के संदर्भ में प्रस्तुत करते हुए मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रयास उपन्यासकार ने किया है पुरूष की वासना के पंक में डुबी हुई नारी में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की शिकार बनी हुई नारी में आत्मविश्वास और आत्मसम्मन का भाव पैदा कर उसके निजी स्वरूप के दर्शाने के सारस्वत प्रयास सका फल ही यह उपन्यास है।

निष्कर्ष

हम अब कह सकते है कि स्त्री अबला नही है बल्कि वह अनन्तशील का स्रोत है अब वह समय आ गया है जब नारी घर की दिवारों में कैद नही रह सकती । उसके घर के ऑगन की सीमाऍ विस्तृत होकर विश्व परिसर में फैल गयी है जीने के अधिकार तक से वंचित आज की नारी ने अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम बढ़ा दिया है गृहस्थी के संचालक में पहले तो स्त्रियॉ सिर्फ तन मन से लगती थी अब तन मन धन से लगती है। नारी अब असहाय मूर्ति न होकर एक शक्ति संबलित स्वरूप मे उभर रही है। वह केवल पुरूष शक्ति को पूजते रहना ही अपना धर्म नही समझती वरन् अपने स्वाभीमान एवं आत्मबल का विकास भी कर रही है। आज की नारी याचना के कठघरे में खड़ी होकर अधिकारों की मॉग करतं हुए खुद को नही देखना चाहती है जिसके कारण वह समस्त अधिकार प्राप्त करने में सक्षम हो सके। बहुत थोड़े पैमाने पर ही सही लेकिन 21वीं सदी की स्त्री की छवि बड़ी तेजी से आकार ग्रहण कर रही है आज भारतीय स्त्री सामाजिक,आर्थिक राजनीतिक स्थिति में सुधार पाती है। वर्तमान में स्त्री उम्मीद कर सकती है कि नई सदी में वह भारतीय समाज की एक समर्थ और स्वतंत्र इकाई होगी। सड़ी–गली मान्यताओं समाज के खण्डहर हो गए भवन को मटियामेट कर उसके स्थान पर नया सृजन करने वाली महाशक्ति का उद्‌गम स्रोत यही है।

संदर्भ सूची

1. सरोज वशिष्ठ ,अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य(लेख), मई 2000 पृष्ठ संख्या 49 हंस
2. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियॉ, पृष्ठ संख्या 74
3. तसलीमा नसरीन, और मत रखो मुझे अंधेरे में देखने दो मुझे, नवम्बर–दिसंबर 1994, पृष्ठ संख्या 75–76,हंस पत्रिका
4. डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, बाणभट्‌ट की आत्मकथा,पृष्ठ संख्या 92
5. डा0 त्रिभुवन सिंह, उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी,पृष्ठ संख्या 137
6. डा0 त्रिभुवन सिंह, उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी,पृष्ठ संख्या 173
7. प्रभा खेतान. हंस की नारीवादी उड़ान, मार्च 2000, हंस ,पृष्ठ संख्या 12
8. मैत्रयी पुष्पा, उपन्यास झूलानट 1999
9. नागपाश में स्त्री, गीता श्री, 2019 द्वितीय संस्करण ैठछ. 978812679006एराजकमल प्रकाशन
10. उषा महाजन, स्त्री अधिकार की कहानियॉ(समीक्षा) नवम्बर 1999, पृष्ठ संख्या 90, हंस
11. मणीलाल, सौन्दर्य प्रतियोगिता सीता से द्धोपदी तक(लेख) दिसंबर 96, पृष्ठ संख्या 39 हंस
12. डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी. बाणभट्‌ट की आत्मकथा,पृष्ठ संख्या 137
13. डा0 स्नेह लता शरेशचन्द्र, उपन्यासकार हजारी प्रसाद, पृष्ठ संख्या 117